किस्मत की बात. . .

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

वसन्त ऋतु का आगमन हो रहा था, फ़ौजियों का थका हुआ यह दस्ता, क्योटो के शाही-शहर के बाहरी इलाकों में आराम कर रहा था। उनकी छोटी-सी छावनी 'साकूरा' के पेड़ों के झुरमुठ में छुपी हुई थी। इन पेड़ों में फूल आने अभी शुरू ही हो रहे थे। चैरी ब्लौसम्स् के हल्के गुलाबी रंग के फूल टहनियों पर खिलकर अस्थायी शान्ति की तस्वीर प्रस्तुत कर रहे थे।

एक दिन सुबह, इस टुकड़ी के सेनापति इनमें से एक 'साकूरा' वृक्ष के नीचे बैठे, छावनी की ओर देख रहे थे। एक-एक करके, उनके सिपाही नींद से जाग रहे थे। उनमें से एक सिपाही आग जलाने के लिए लकड़ियों के ढेर को हिलाना-डुलाना शुरू कर रहा था। कुछ अन्य सिपाही खाना ढूँढ़ने में लगे थे।

युद्ध बहुत लम्बा चला था। यह पिछले कई सालों से जापान के कई प्रान्तों में लड़ा जा रहा था। सेनापति निन्टोकू देख पा रहे थे कि इस युद्ध ने उनके सैनिकों को कितना नुकसान पहुँचाया था। उन सैनिकों ने एक बार भी अपनी कठिनाईयों का ज़िक्र नहीं किया था, एक-बार भी नहीं, परन्तु निन्टोकू अपने सिपाहियों को अच्छी तरह जानते थे। वे देख पा रहे थे कि कैसे उनके चहरे पीले पड़ गए थे; कैसे उनके क़दम धीमे और हतोत्साहित-से हो गए थे; कैसे युद्ध का मैदान छोड़ते ही उनके कन्धे झुक जाते थे। एक समय ऐसा था जब ये सैनिक सीना तानकर चलते थे। अपनी विजयगाथाओं का गुणगान किया करते थे और वीरता के उन कारनामों का भी जो वे भविष्य में निश्चित तौर पर करने वाले थे।

सेनापति निन्टोकू वहाँ बैठकर यह सोच-विचार कर ही रहे थे कि सेना का मनोबल कैसे बढ़ाया जाए, तभी एक सैनिक दौड़ता हुआ उनके पास आया।

"सेनापति जी!" उस आदमी ने अपने हाथों को अपने घुटनों पर रखते हुए हाँफ़ते-हाँफ़ते कहा। "राजमहल से आपके लिए एक सन्देश आया है।" उसने एक पतला, लम्बा-सा लिफ़ाफ़ा उनकी ओर बढ़ाया।

सेनापति ने सैनिक के हाथ से लिफ़ाफ़ा लिया और उसके अन्दर रखा काग़ज़ खोला। उस काग़ज़ पर एक सन्देश भेजा गया था जो उसकी साफ़, सुन्दर, गाढ़ी लिखाई के बिल्कुल विपरीत था। सेनापति ने

पत्र पढ़ा और वे रुककर शून्य में ताकने लगे। सूर्योदय हो चुका था। सूरज की हल्की नारंगी रोशनी से अब पेड़ जगमगाने लगे थे और मैदान धूप में नहाए हुए थे।

“सेनापति जी?” सैनिक ने उत्सुकता से पूछा। “क्या हुआ?”

सेनापति एक पल के लिए चुप रहे। उनके सिर के ऊपर जो शाखा थी, उससे चैरी ब्लौसम्स् का एक फूल टूटकर उनकी गोद में आ गिरा। उन्होंने उसे उठाया, उसकी कोमल, महीन पंखुड़ियों को देखा। सफ़ेद रंग के इन फूलों में कहीं-कहीं लाल रंग की नसें दिखाई दे रही थीं।

सेनापति निन्टोकू सिपाही की ओर मुड़े। “हमें जल्द ही युद्ध में वापस जाना होगा,” उन्होंने कहा। “शत्रु उत्तर दिशा से आगे की ओर बढ़ रहा है। उनके पास बहुत-से सैनिक हैं।”

“कितने?” सैनिक ने पूछा।

“कम-से-कम तीन गुना पैदल सैनिक। और दो गुना घुड़सवार।”

“क्या हम अतिरिक्त सैन्य-बल बुला सकते हैं?”

“हाँ, परन्तु वे समय पर नहीं पहुँचेंगे।”

“तो हम क्या करेंगे?”

“हम लड़ेंगे,” सेनापति ने कह दिया। इसके साथ ही वे उठे, पत्र को अपनी जेब में रखा और छावनी की ओर जाने वाली सड़क पर चल पड़े।

सिपाही का वह सवाल सेनापति के मन में बार-बार उठ रहा था। वे क्या *करेंगे* ? उनके सैनिक चाहे जितनी भी वीरता के साथ लड़ें, वे अपने शत्रु को नहीं रोक पाएँगे और फिर, शाही-शहर पर शत्रु का कब्ज़ा हो जाएगा।

कुछ देर चलने के बाद, वे एक मोड़ पर मुड़े और उन्हें अपने सामने एक टोरी दरवाज़े का चमकीला लाल वृत-खण्ड दिखाई दिया। वे एक मन्दिर की चौखट पर खड़े थे। प्रवेशद्वार के दोनों ओर पत्थर के दो रक्षक कुत्ते पहरा दे रहे थे, एक का मुँह खुला था और दूसरे का बन्द। वे देखने में डरावने थे फिर भी ऐसा लग रहा था कि वे सेनापति को अन्दर बुला रहे हैं।

सेनापति निन्टोकू दरवाज़े से होते हुए मन्दिर में गए। पूजावेदी पर पहुँचकर उन्होंने झुककर ज़मीन पर अपना माथा टेका। फिर वे थोड़ी देर तक अपने घुटनों के बल वहीं बैठे रहे। मन्दिर की शान्ति उनके कण-कण में समाकर उनके हृदय में व्याप्त होने लगी। उनकी आँखें स्वतः ही बन्द हो गईं। उनके अन्दर से अपने आप यह प्रार्थना निकली। उन्होंने अपना कर्तव्य निभाने के लिए बल और प्रज्ञान माँगा, जिससे यह सुनिश्चि किया जा सके कि शहर हमेशा के लिए सुरक्षित हो जाए। उन्होंने यह दुआ माँगी की उनके सिपाही अपने परिवारों से वापस मिल सकें।

वे यह प्रार्थना कर ही रहे थे कि उन्हें कुछ सुनाई दिया : एक आवाज़, जो पहले हल्की थी और फिर बढ़ती गई। वह आवाज़ कहीं उनके पीछे-से आ रही थी। वह किसी धातु की आवाज़ लग रही थी।

उन्होंने अपनी आँखे खोलीं और जल्द-ही पता लगा लिया कि वह कहाँ से आ रही है। वह एक सिक्का था जो खुशी-से फ़र्श पर लुढ़कता हुआ आ रहा था। उस सिक्के ने पहले अपनी गति को धीमा किया और फिर जहाँ सेनापति घुटनों के बल बैठे हुए थे, वहाँ जाकर वह थोड़ा फुदका, लड़खड़ाया और चित ऊपर की ओर कर — *खन्न* — और आख़िर वह फ़र्श पर आकर रुक गया।

सेनापति ने आस-पास देखा। मन्दिर में और कोई नहीं था। उन्होंने उस सिक्के को उठाया और उसे उछालते हुए अपनी हथेली पर लिया। कुछ पल के लिए वे उस सिक्के को बड़े ग़ौर से देखते रहे। धीरे-धीरे उनके चहरे पर एक मुस्कान आ गई।

***

थोड़ी देर बाद जब सेनापति निन्टोकू अपनी छावनी में वापस पहुँचे तो उन्होंने सैनिकों को अपने आस-पास इकट्ठा किया और उन्हें आने वाले युद्ध के बारे में बताया। सैनिकों ने अपने चहरे के भाव को छुपाते हुए यह सूचना सुनी परन्तु सेनापति, सैनिकों के हाव-भाव देखकर यह बता पा रहे थे कि उन्हें इस बात पर सन्देह था। उनकी आँखें खुली की खुली रह गई थीं; उन्होंने चुप्पी साध ली थी।

“मुझे पता है कि तुम लोग क्या सोच रहे हो,” सेनापति निन्टोकू ने कहा। “पर किस्मत हमेशा वैसी नहीं होती जैसी नज़र आती है। यह सिक्का देख रहे हो?”

उन्होंने मन्दिर में मिले उस सिक्के को ऊपर उठाकर दिखाया।

“जब मैं पास के मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो यह सिक्का मेरे पास आया। मुझे लगता है कि यह एक संकेत है।”

“संकेत?” उनमें से एक ने कहा। “वह कैसे, सेनापति जी?”

“अच्छा, तुम्हें पता है कि हमारे पूर्वजों के समय में हमारे सेनाध्यक्ष क्या किया करते थे।”

सैनिकों ने एक-दूसरे की ओर देखा, उनके चहरे पर कोई भाव नहीं था।

“नहीं, सेनापति जी,” आख़िरकार उन्होंने कहा। “हमें नहीं पता।”

“मैं समझाता हूँ,” सेनापति निन्टोकू ने कहा। “किसी बड़ी लड़ाई से पहले सेनाध्यक्ष अपने सैनिकों को अपने आस-पास एकत्र करते थे — ठीक वैसे ही जैसे मैंने आज तुम लोगों को किया है। फिर वे एक सिक्का लेते थे, अधिकतर वह ऐसा सिक्का होता जिसे उन्होंने पास के किसी मन्दिर या दरगाह से आशीर्वादित कराया हो। वैसा ही जैसा मेरे हाथ में है।”

ऐसा कहकर सेनापति रुके।

“और?” एक सैनिक उत्सुकतापूर्वक बीच में ही बोल पड़ा। “और फिर?”

“और फिर सेनाध्यक्ष अपने सिपाहियों से कहते, ‘सैनिको! मैं इस सिक्के को उछालने वाला हूँ। अगर चित आई तो इसका अर्थ होगा कि हम विजयी होंगे।’ और हर बार जब सिक्के पर चित आती तो चाहे परिस्थितियाँ कितनी ही कठिन क्यों न हों या उनके सामने कितनी ही बड़ी सेना क्यों न खड़ी हो, वे युद्ध जीत जाते थे।”

“क्या?” “नहीं — मेरा मतलब है, सचमुच?” “हर बार?” सैनिक आश्चर्य में थे।

“हाँ,” सेनापति निन्टोकू ने कहा। “हर बार। तो अब जो सिक्का मेरे हाथ में है, मैं इसे उछालने जा रहा हूँ। और मेरी बात याद रखना, अगर चित आई तो हम ‘ज़रूर’ जीतेंगे, ठीक वैसे ही जैसे हमसे पहले हमारे पूर्वज जीतते थे।”

सेनापति ने अपने अंगूठे और उंगली के बीच सिक्के को पकड़ा। सैनिक नज़दीक आ गए जिससे वे अच्छी तरह देख सकें। उनकी जिज्ञासा — उनकी आशा, यह विश्वास करने की उनकी इच्छा कि शायद, बस शायद कहीं उनकी किस्मत पहले से तय न हो चुकी हो — इसने सभी सन्देह दूर कर दिए।

और सेनापति निन्टोकू ने सिक्के को हवा में उछाल दिया। पेड़ों की टहनियों के बीच कलाबाज़िया खाता वह ऊपर, ऊपर, और ऊपर चला गया। सबकी नज़रें उस पर टिकी थीं; हिलना तो दूर की बात है, वे अपनी साँसों को भी थामें खड़े थे।

आख़िर, अनन्तकाल जैसे प्रतीत होने वाले समय के बाद, गुरुत्वाकर्षण ने सिक्के को नीचे खींच लिया और वह सेनापति की खुली हुई हथेली पर आ गिरा। उन्होंने सिक्के को देखा, उनका चहरा गम्भीर था। फिर उन्होंने सामने की ओर देखा।

"चित," उन्होंने कहा।

एक क्षण के लिए शान्ति-सी छा गई। और फिर — हर्षोल्लास और खुशी के ठहाके। तालियों की गड़गड़ाहट। सिपाही एक-दूसरे के गले मिलने लगे, सीना ठोककर अपना बल प्रदर्शन करने लगे, बन्द मुठ्ठी आसमान की ओर उठाने लगे। अचानक, सब कुछ सम्भव लग रहा था। जीत नज़र आने लगी थी।

नई ऊर्जा से भरे, वे युद्ध में उतर गए। शत्रुदल को अपनी ओर तेज़ी से बढ़ता देखकर वे हतोत्साहित नहीं थे, वे भयभीत नहीं थे। उन्होंने सभी सम्भव रणनीतियों का उपयोग किया। वे ऐसी प्रवीणता और पराक्रम के साथ लड़े जिसका अपने अन्दर होने का उन्हें खुद भी अन्दाज़ा नहीं था। और यह क्या, दिन समाप्त होते-होते उनके शत्रुओं ने पराजय स्वीकार कर ली।

सेनापति निन्टोकू 'साकूरा' के पेड़ों के समीप अपने स्थान से शत्रुओं को पलायन करते हुए देख रहे थे। आसमान एक बार फिर नारंगी हो गया था, सूरज दिन भर के काम के बाद विश्राम करने लौट रहा था।

तभी, पास कहीं कुछ हलचल हुई। सेनापति ने पलटकर देखा तो एक सैनिक उनकी ओर आ रहा था — वही सैनिक जिसने महल से आया हुआ सन्देश उन तक पहुँचाया था।

"सेनापति जी," सैनिक ने कहा। "मुझे हम सबकी किस्मत पर विश्वास नहीं हो रहा! भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि सिक्के पर चित आई!"

"हाँ, सचमुच," सेनापति निन्टोकू ने कहा। "हमारी किस्मत सचमुच बहुत अच्छी है।"

"यह लो," एक क्षण रुककर उन्होंने कहा। "मैं चाहता हूँ कि तुम इसे रखो।" ऐसा कहकर उन्होंने सिक्का सैनिक को दिया और उसने, उस सिक्के को ध्यान से अपने हाथों में ले लिया।

तब सेनापति निन्टोकू ने कहा, “किस्मत की याद दिलाने वाला यह सिक्का, अपने हाथ में थामे रखो।” उन्होंने सैनिक की पीठ थपथपाई और वहाँ से चले गए।

सैनिक ने सिक्के को देखा, चित पर बने चहरे पर ढलते हुए सूरज की अन्तिम किरणें पड़ रही थीं। उसने सिक्का पलटा। एक बार फिर, सिक्के की सतह पर बना चहरा किरणों से दमक उठा था।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।